Antakaran Prabodha / अन्त:करण प्रबोध:

अन्त:करण प्रबोध: (संस्कृत)	अन्त:करण प्रबोध: (हिंदी)	Antakaran Prabodha (English)
अन्त:करण! मद्वाक्यं सावधानतया शृणु। कृष्णात्परं नास्ति देवं वस्तुतो दोषवर्जितं॥१॥	हे अन्त: करण! मेरे वाक्य को सावधान होकर सुनो - वास्तव में श्रीकृष्ण से बढ़कर कोई और दोषरहित देवता नहीं है॥१॥	O my mental faculties (mind, intelligence, ego and consciousness)! pay attention to what I say. Definitely, there is no greater and flawless god than Lord Krishna.॥1॥
चाण्डाली चेद्राजपत्नी जाता राज्ञा च मानिता। कदाचिदपमानेऽपि मूलत: का क्षतिर्भवेत्॥२॥	निम्न जाति की स्त्री के राजपत्नी और राजा से सम्मानित होने के बाद यदि कभी (राजा से) उसका अपमान हो भी जाए तो वास्तविकता में उसकी कोई क्षति नहीं होती॥२॥	Let a lower caste woman gets married to a king and is respected by him. Later, even if, she is sometime disrespected by the king, actually, her status is not lost.॥2॥
समर्पणादहं पूर्वमुत्तम: किं सदा स्थित:। का ममाधमता भाव्या पश्चात्तापो यतो भवेत्॥३॥	प्रभु को समर्पण से पहले क्या मैं सदा अच्छी स्थिति में था ? फिर अपनी अधमता का क्या विचार करना जिससे पश्चात्ताप हो॥३॥	Was I always in good condition, before surrendering to Lord? So there is no point in repenting over my misery.॥3॥
सत्यसंकल्पतो विष्णु- र्नान्यथा तु करिष्यति। आज्ञैव कार्या सततं स्वामिद्रोहोऽन्यथा भवेत्॥४॥	सत्य संकल्प श्रीविष्णु निश्चय ही कुछ गलत नहीं करेंगे, अत: निरंतर उनकी आज्ञा का पालन ही कर्त्तव्य है, उनके विपरीत कुछ करना उनसे द्रोह करना होगा॥४॥	Surely, infallible Lord Vishnu will not do anything wrong, so constantly obeying him is my duty. I will be disloyal to him if I act against his wishes.॥4॥
सेवकस्य तु धर्मोऽयं स्वामी स्वस्य करिष्यति। आज्ञा पूर्वं तु या जाता गंगासागरसंगमे॥५॥	सेवक का यही निश्चित धर्म है, शेष स्वामी स्वयं करेंगे। गंगा और सागर के संगम पर पूर्व में जो आज्ञा हुई थी॥५॥	This, only is the duty of a devotee. Rest will be taken care by Lord himself. Earlier, at the confluence of the Ganga and the sea, what he has instructed॥5॥
यापि पश्चान्मधुवने न कृतं तद्द्वयं मया। देहदेशपरित्याग: तृतीयो लोकगोचर:॥६॥	और जो आज्ञा बाद में मधुवन में भी हुई थी और मेरे द्वारा जिन दोनों का पालन नहीं हुआ था, वे थीं - शरीर, स्थान और दिखाई देने वाले इस संसार का त्याग॥६॥	And later, what he has instructed in Madhuvan, I have not obeyed both of them. Those were - renunciation of

		this body, place and the visible world.॥6॥
पश्चात्तापः कथं तत् सेवकोऽहं न चान्यथा। लौकिकप्रभुवत्कृष्णो न द्रष्टव्यः कदाचन॥७॥	इसमें पश्चात्ताप क्या करना, मैं तो केवल उनका सेवक ही हूँ। श्रीकृष्ण को कभी भी सांसारिक भगवान की तरह नहीं देखना चाहिए॥७॥	Why to repent over it, I am only his devotee. Lord Krishna should never be looked as a worldly god.॥7॥
सर्वं समर्पितं भक्त्या कृतार्थोऽसि सुखी भव। प्रौढापि दुहिता यद्वत्- स्नेहान्न प्रेष्यते वरे॥८॥	भक्तिपूर्वक (प्रभु को) सब समर्पित करके कृतार्थ हो जाओ, सुखी हो जाओ। जिस प्रकार पुत्री के वयस्क होने के बाद भी स्नेह के कारण उसको उसके पति के पास नहीं भेजते हैं॥८॥	Surrender everything to Lord Krishna with devotion and become fulfilled and blissful. As daughter is not sent to his husband by parents even after her maturity due to attachment॥8॥
तथा देहे न कर्तव्यं वरस्तुष्यति नान्यथा। लोकवच्चेत्स्थितिर्मे स्यात् किं स्यादिति विचारय॥९॥	उसी प्रकार इस शरीर के साथ नहीं करना चाहिए अन्यथा प्रभु प्रसन्न नहीं होंगे। यह विचार करो कि यदि इस लौकिक दृष्टि से मुझे परखा जाए तो मेरी स्थिति क्या होगी॥९॥	her husband will not be happy over it. We should not act similarly with our body (by not offering it to God). Just think, I was to be evaluated based on this world idea, where would I be.॥9॥
अशक्ये हरिरेवास्ति मोहं मा गाः कथंचन। इति श्रीकृष्णस्यदासस्य वल्लभस्य हितं वचः। चित्तं प्रति यदाकर्ण्य भक्तो निश्चिन्ततां व्रजेत्॥१०॥	मुश्किल स्थितियों में केवल श्रीहरि ही मेरे हैं और मुझे किसी प्रकार मोह न हो। श्रीकृष्ण के दास वल्लभ के इन हितकारी वचनों को मन में धारण कर भक्त को निश्चिन्त होकर रहना चाहिए॥१०॥	In difficult situations, only Sri Hari is mine and I should not get deluded. Remember these beneficial words of Vallabh, a devotee of Lord in your mind and become carefree.॥10॥

Comments

You do not have permission to add comments.

Navigation
- Home/मुख्य पृष्ठ
  - Ashtavakra Gita / अष्टावक्र गीता
  - Bhagwat / भागवत
  - Chatuh Shloki Bhagwat / चतु: श्लोकी भागवत
  - Gita / गीता
  - Shikshashtakam / शिक्षाष्टकं
  - SoundBytes / सुवचन
  - Sri Ram Hrudayam / श्रीराम हृदयम्
  - Sri Shankaracharya / श्रीशंकराचार्य
  - Sri Tulsidas / श्रीतुलसीदास
  - Sri Vallabhacharya / श्रीवल्लभाचार्य
  - Subhashitani / सुभाषितानि
  - Upanishad / उपनिषद्
- General
  - Bookmarks
  - Getting Books
  - Hindi Alphabets
  - Important Books
- Miscellaneous
- Sitemap

Home/मुख्य पृष्ठ > Sri Vallabhacharya / श्रीवल्लभाचार्य >

Balbodh / बालबोध

बालबोध (संस्कृत)	बालबोध (हिंदी)	Balbodh (English)
नत्वा हरि सदानन्दं सर्व सिद्धान्त संग्रहम्। बालप्रबोधनार्थाय वदामि सुविनिश्चितम्॥१॥	सदा आनंद रूप श्रीहरि को नमस्कार करके, सब सिद्धांतों के सुनिश्चित सार-संग्रह को साधकों की जानकारी के लिए बताता हूँ॥१॥	Bowing down to ever blissful Sri Hari, I now tell you the definite essence of all doctrines for understanding of seekers.॥1॥
धर्मार्थकाममोक्षाख्या- स्चत्वारोऽर्था मनीषिणाम्। जीवेश्वर विचारेण द्विधा ते हि निरूपिता:॥२॥	धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष, मनन करने वाले मनुष्यों के लिए चार पुरुषार्थ कहे गए हैं। जीवत्व और ईश्वरत्व देने वाले इन पुरुषार्थों का दो प्रकार से वर्णन किया गया है॥२॥	There are four goals for thoughtful human beings: Righteousness, wealth, desire fulfillment and salvation.These are described in two ways, based on their outcome - Jeeva and God.॥2॥
अलौकिकास्तु वेदोक्ता: साध्य साधन संयुता। लौकिकात्ऋषिभि: प्रोक्तास्- तथैवैश्वरशिक्षया ॥३॥	अलौकिक पुरुषार्थ तो वेदों के अनुसार साध्य और साधन से युक्त हैं और लौकिक पुरुषार्थ ऋषियों द्वारा ईश्वर की शिक्षा के अनुसार कहे गए हैं॥३॥	Divine goals are to be achieved as per the means and aims described in Vedas and worldly goals are described by the sages as taught to them by Lord Krishna.॥3॥
लौकिकांस्तु प्रवक्ष्यामि वेदादाद्या यत: स्थिता:। धर्मशास्त्राणि नीतिश्च कामशास्त्राणि च क्रमात्॥४॥	लौकिक पुरुषार्थों को बताता हूँ जो वेदों के प्रारंभ में स्थित हैं, वे क्रमश: धर्म, नीति और काम शास्त्र हैं॥४॥	Worldly goals are righteousness, ethics and desire fulfillment, respectively. These consist of the initial part of the Vedas.॥4॥
त्रिवर्ग साधकानीति न तन्निर्णय उच्यते। मोक्षे चत्वारि शास्त्राणि लौकिके परत: स्वत:॥५॥	साधक केवल इन त्रिवर्ग का ही पालन न करें, ऐसा निर्णय कहा जाता है। मोक्ष के चार शास्त्र (मार्ग) हैं जिसमें से दो लौकिक हैं॥५॥	Seeks should not strive for these three goals only, this is the decision. There are four types of scriptures on attaining salvation of which two are worldly.॥5॥
द्विधा द्वे द्वे स्वस्तत सांख्य योगौ प्रकीर्तितौ। त्यागात्याग विभागेन सांख्ये त्याग: प्रकीर्तित:॥६॥	सांख्य और योग को दो प्रकार से दो भागों में बांटा गया है - स्वाश्रय और पराश्रय से तथा त्याग और अत्याग के अनुसार। सांख्य में त्याग का महत्त्व कहा गया है॥६॥	Sankhya and Yoga are divided into two parts in two ways: based on self effort and other's help & based on renunciation and non-

		renunciation. Renunciation is held in high regards in Sankhya.॥6॥
अहन्ताममतानाशे सर्वथा निरहंकृतौ। स्वरूपस्थो यदा जीवः कृतार्थः स निगद्यते॥७॥	अहंता, ममता का नाश करके जब जीव सब प्रकार से अहंकार मुक्त होकर स्वरूप में स्थित हो जाता है तब उसको कृतार्थ कहा जाता है॥७॥	Devoid of body consciousness and mental attachments, when Jeeva gets established in Self without any ego whatsoever, he is said to have achieved his goal of salvation.॥7॥
तदर्थं प्रक्रिया काचित्- पुराणेऽपि निरूपिता। ऋषिभिर्बहुधा प्रोक्ता फ़लमेकमबाह्मतः॥८॥	इसकी प्रक्रिया का वर्णन कुछ पुराणों में भी किया गया है और ऋषियों ने भी इसको बहुत प्रकार से कहा है, आतंरिक रूप से इनका सबका फल समान है॥८॥	This has been described in some Puranas also and sages have also illustrated it in many ways.The internal result is the same in all methods.॥8॥
अत्यागे योगमार्गो हि त्यागोऽपि मनसैव हि। यमादयस्तु कर्तव्याः सिद्धे योगे कृतार्थता॥९॥	अत्याग रूपी योग मार्ग में मन से सभी वस्तुओं का त्याग किया जाता है, यम आदि नियमों का पालन करते हुए योग में सिद्धि रूपी कृतार्थता प्राप्त होती है॥९॥	Even in Yoga through non-renunciation, mental renunciation of everything is a must. Abiding by self-control and other disciplines one attains salvation.॥9॥
पराश्रयेण मोक्षस्तु द्विधा सोऽपि निरूप्यते। ब्रह्म ब्राह्मणतां यातः तद्रूपेण सुसेव्यते॥१०॥	पराश्रय से मोक्ष प्राप्ति दो प्रकार से होती है, अब उसका वर्णन किया जाता है - ब्रह्म ही ब्रह्मा हुआ है, अतः उसकी उस रूप में उपासना की जाती है॥१०॥	Salvation depending on others is of two types which is now described. Supreme Brhama (Sri Krishna) himself has manifested into Sri Brhmaa ji, so He is worshipped in that form.॥10॥
ते सर्वथा न चाद्येन शास्त्रं किञ्चिदुरीरितम्। अतं शिवश्च विष्णुश्च जगतो हितकारकौ॥११॥	वर्तमान शास्त्रों में उसका कुछ भी वर्णन नहीं मिलता है, अतः जगत के हितकारक श्री शिव और श्री विष्णु की उपासना की जाती है॥११॥	But current scriptures do not detail about it at all so Sri Shiva and Sri Vishnu, who are benevolent to this world, are worshipped.॥11॥
वस्तुनः स्थिति संहार- कार्यौ शास्त्र प्रवर्त्तकौ। ब्रह्मैव तादृशं यस्मात्- सर्वात्मकतयोदितौ ॥१२॥	इस जगत की स्थिति और विनाश का कार्य करने वाले और अपने-अपने शास्त्रों का प्रवर्तन करने वाले उन दोनों के रूप में सर्वात्मक ब्रह्म ही प्रकट हुए हैं॥१२॥	All pervading, Supreme Brahma manifested himself into them as the maintainer and destroyer of this world. So, they propagate their respective scriptures of salvation posing themselves as supreme Brahma.॥12॥
निर्दोषपूर्णगुणता तत्तच्छास्त्रे तयोः कृता। भोगमोक्षफले दातुं	उन शास्त्रों में उनकी दोष रहित और सर्वगुण संपन्नता का वर्णन किया गया है,	Those scriptures describe them as devoid of all

शक्तौ द्वावपि यद्यपि॥१३॥	दोनों ही मोक्ष और भोग दोनों ही देने में समर्थ हैं परन्तु॥१३॥	impurities and possessing all divine attributes . Both of them are capable of giving worldly pleasure and salvation, but॥13॥
भोगः शिवेन मोक्षस्तु विष्णुनेति विनिश्चयः। लोकेऽपि यत्प्रभुर्भुंक्ते तन्न यच्छति कर्हिचित्॥१४॥	भोग के लिए श्रीशिव और मोक्ष के लिए श्रीविष्णु की उपासना करें ऐसा निर्णय है - जैसे कि संसार में भी स्वामी जो स्वयं उपभोग करता है, वह किसी को नहीं देता है॥१४॥	For worldly pleasure Sri Shiva and for salvation Sri Vishnu is to be worshipped. This is the decision. Even in the world also, the master does not give what he himself enjoys.॥14॥
अतिप्रियाय तदपि दीयते क्वचिदेव हि। नियतार्थप्रदानेन तदीयत्वं तदाश्रयः॥१५॥	अधिक प्रिय होने पर कभी कभी वह भी दे दिया जाता है पर सामान्य रूप से उनका स्वभाव जानकर ही उनका आश्रय लेना चाहिए॥१५॥	Sometimes even that is given to someone very dear but this is rare! So one should carefully decide as to which God he/she should take refuge, based on God's normal behaviour.॥15॥
प्रत्येकं साधनं चैतद् द्वितीयार्थे महाश्रमः। जीवा स्वभावतो दुष्टा दोषाभावाय सर्वदा॥१६॥	सबको इसी प्रकार से साधन करना चाहिए क्योंकि दूसरे फल की प्राप्ति में विशेष श्रम है। जीव स्वाभाविक रूप से दुष्ट हैं और सदा दोष की भावना वाले हैं॥१६॥	Everyone should act like this because getting the second goal is really tough. Jeeva are naturally impure and imperfect.॥16॥
श्रवणादि ततः प्रेम्णा सर्वं कार्य हि सिद्ध्यति। मोक्षस्तु विष्णोः सुलभो भोगश्च शिवतस्तथा॥१७॥	अतः प्रेम पूर्वक प्रभु के चरित्र का श्रवण आदि करने से सभी कार्य सिद्ध हो जाते हैं। श्रीविष्णु के लिए मोक्ष देना सुलभ है और श्रीशिव के लिए भोग॥१७॥	So on listening about the life and glory of God with love, one can attain everything easily. Salvation is easy to get from Sri Vishnu and worldly pleasure from Sri Shiva.॥17॥
समर्पणेनात्मनो हि तदीयत्वं भवेद्ध्रुवम्। अतदीयतया चापि केवल- श्चेत् समाश्रितः॥१८॥	स्वयं को अचल रूप से उनको समर्पित करें अथवा समर्पित न कर पाने पर भी केवल उनके आश्रित होकर रहें॥१८॥	Surrender to Him completely with unwavering devotion or if we are unable to do so, we should take refuge in him only.॥18॥
तदाश्रयतदीयत्व बुद्ध्यै किंचित्समाचरेत्। स्वधर्ममनुतिष्ठन्वै भारद्वैगुण्यमन्यथा। इत्येवं कथितं सर्व नैताज्ज्ञाने भ्रमः पुनः॥१९॥	स्वधर्म के पालन के लिए जो कुछ भी करें वह उन पर आश्रित बुद्धि से ही करें अन्यथा श्रम दोगुना लगेगा। इस प्रकार वह सब कुछ कह दिया गया है जिसको जान लेने से फिर भ्रम नहीं होगा॥१९॥	Whatever you do for fulfilling your duty, do it with complete reliance on him only otherwise it will become double in load. So in this way everything is told knowing which, there should not be any doubt.॥19॥

Comments

You do not have permission to add comments.

Navigation
Home/मुख्य पृष्ठ
Ashtavakra Gita / अष्टावक्र गीता
Bhagwat / भागवत
Chatuh Shloki Bhagwat / चतुः श्लोकी भागवत
Gita / गीता
Shikshashtakam / शिक्षाष्टकं
SoundBytes / सुवचन
Sri Ram Hrudayam / श्रीराम हृदयम्
Sri Shankaracharya / श्रीशंकराचार्य
Sri Tulsidas / श्रीतुलसीदास
Sri Vallabhacharya / श्रीवल्लभाचार्य
Subhashitani / सुभाषितानि
Upanishad / उपनिषद्
General
Bookmarks
Getting Books
Hindi Alphabets
Important Books
Miscellaneous
Sitemap

Home/मुख्य पृष्ठ > Sri Vallabhacharya / श्रीवल्लभाचार्य >

Bhaktivardhini / भक्तिवर्धिनी

भक्तिवर्धिनी (मूल संस्कृत)	भक्तिवर्धिनी (हिंदी भावानुवाद)	Bhaktivardhini (English)
यथा भक्तिः प्रवृद्धा स्यात्त- थोपायो निरूप्यते। बीजभावे दृढे तु स्यात्त्- यागाच्छ्रवणकीर्तनात्॥१॥	जिस प्रकार से भक्ति वृद्धि को प्राप्त होती है अब उस विधि का निरूपण किया जाता है - भक्ति का आधार त्याग, श्रवण और कीर्तन से दृढ़ होता है॥१॥	Now, the way devotion gets enhanced is narrated. The seed of devotion takes firm roots through renunciation and by listening and singing the divine glory of God.॥1॥
बीजदार्ढ्यप्रकारस्तु गृहे स्थित्वा स्वधर्मतः। अव्यावृत्तो भजेत्कृष्णं पूजया श्रवणादिभिः॥२॥	भक्ति को मूल से दृढ़ करने के लिए धर्मानुसार अपने घर में रहते हुए ही एकाग्र चित्त से भगवान श्रीकृष्ण का पूजा, श्रवण आदि विधियों से भजन करना चाहिए॥२॥	To strengthen the devotion from its roots, one should continue doing worship and listening to God's glories single-mindedly while living the life of a householder.॥2॥
व्यावृतोऽपि हरौ चित्तं श्रवणादौ यतेत्सदा। ततः प्रेम तथाऽऽसक्ति- र्व्यसनं च यदा भवेत्॥३॥	सांसारिक आकर्षण शेष रहते हुए भी चित्त को श्रीहरि के श्रवण-स्मरण में तब तक प्रयत्नपूर्वक लगाना चाहिए जब तक कि उनमें क्रमशः प्रेम, आसक्ति और व्यसन की प्राप्ति न हो जाये॥३॥	Till the time worldly attractions are remaining, one should constantly strive to devote his mind in listening, singing and remembering the glory of God. This will respectively lead to love, attachment and addiction for Him.॥3॥
बीजं तदुच्यते शास्त्रे दृढं यन्नापि नश्यति। स्नेहाद्रागविनाशः स्यादा- सक्त्या स्याद् गृहारुचिः॥४॥	शास्त्र के अनुसार भक्ति के आधार को तब दृढ़ कहा जाता है जब प्रभु-प्रेम से सांसारिक आकर्षणों का नाश हो जाता है, अनासक्ति हो जाती है और घर का मोह नहीं रहता है॥४॥	Scriptures call the devotion firm when attachment to this world is destroyed, one becomes indifferent and is no longer interested in his home.॥4॥
गृहस्थानां बाधकत्वम- नात्मत्वं च भासते। यदा स्याद्व्यसनं कृष्णे कृतार्थः स्यात्तदैव हि॥५॥	जब घर एक रूकावट और स्वयं से अलग लगने लगता है और श्रीकृष्ण-भक्ति ही भक्त का व्यसन हो जाता है, तब वह कृतार्थ हो जाता है॥५॥	When one gets addicted to Sri Krishna, home starts appearing as an obstacle and different from Self. At this stage, a devotee is fulfilled.॥5॥
तादृशस्यापि सततं गृहस्थानं विनाशकम्।	ऐसी भक्ति होने पर भी सदा घर में निवास करना, भक्ति के विकास में बाधा है,	Even after getting this type of devotion in Sri Krishna, continual

त्यागं कृत्वा यतेद्यस्तु तदर्थार्थैकमानसः॥६॥	अतः घर का त्याग करके एकाग्र मन से भक्ति की वृद्धि के लिए प्रयत्न करना चाहिए॥६॥	stay at come is an impediment to further progress of devotion. So one should leave home and strive for increasing his devotion even further with fixed mind.॥6॥
लभते सुदृढां भक्तिं सर्वतोप्प्यधिकां पराम्। त्यागे बाधकभूयस्त्वं दुःसंसर्गात्तथान्नतः॥७॥	इस प्रकार प्रयत्न करने से सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण अविचल परा-भक्ति प्राप्त हो जाती है। इस (गृह)त्याग में दुर्जनों का साथ और अन्न प्रमुख बाधाएँ हैं॥७॥	On trying like above, one gets divine devotion for Lord which is simply beyond everything. In this life of renunciation bad company and improper food are two main obstacles.॥7॥
अतस्थेयं हरिस्थाने तदीयैः सह तत्परैः। अदूरे विप्रकर्षे वा यथा चित्तं न दुष्यति ॥८॥	अतः श्रीहरि के मंदिर के समीप उनके भजन में लगे हुए भक्तों के साथ निवास करना चाहिए। चाहे पास रहें अथवा दूर पर इस प्रकार रहना चाहिए कि मन दूषित न हो॥८॥	Hence one should reside near a temple of Lord with the devotees singing his praise. Whether you stay near or far, make sure your mind should not get infected with unholy thoughts.॥8॥
सेवायां वा कथायां वा यस्याऽऽसक्तिर्दृढा भवेत्। यावज्जीवं तस्य नाशो न क्वापीति मतिर्मम॥९॥	सेवा से अथवा श्रवण से जिस प्रकार से भी श्रीकृष्ण-प्रेम में प्रगाढ़ता बढ़े, उसको जीवन शेष रहते हुए किसी भी प्रकार से छोड़ना नहीं चाहिए; ऐसा मेरा(श्रीवल्लभाचार्य का) विचार है॥९॥	One should constantly strive to strengthen his devotion for Lord Krishna either through his service or through listening about him. Sri Vallabhacharya believes that we should not stop these practices all our lives under any circumstances.॥9॥
बाधसंभावनायं तु नैकान्ते वास इष्यते। हरिस्तु सर्वतो रक्षां करिष्यति न संशयः॥१०॥	बाधा की सम्भावना सोचकर अकेले रहने की इच्छा नहीं करनी चाहिए। श्रीहरि निश्चय ही सब प्रकार से रक्षा करेंगे इसमें कोई संदेह नहीं है॥१०॥	One should not seek solitude due to fear of possible hindrances. Sri Hari definitely saves his devotees in all circumstances, undoubtedly.॥10॥
इत्येवं भगवच्छास्त्रं गूढतत्वं निरूपितम्। य एतत्समधीयीत तस्यापि स्याद् दृढा रतिः॥११॥	इस प्रकार भगवत शास्त्रों के गूढ़ तत्त्व का निरूपण किया गया जो इसका ध्यानपूर्वक मनन करता है उसकी भी भगवान में दृढ़ भक्ति हो जाती है॥११॥	Thus hidden secret of devotional scriptures is revealed. Whosoever deliberates on it intently, gets endowed with firm devotion for Sri Krishna.॥11॥

Comments

You do not have permission to add comments.

Navigation
Home/मुख्य पृष्ठ
Ashtavakra Gita / अष्टावक्र गीता
Bhagwat / भागवत
Chatuh Shloki Bhagwat / चतु: श्लोकी भागवत
Gita / गीता
Shikshashtakam / शिक्षाष्टकं
SoundBytes / सुवचन
Sri Ram Hrudayam / श्रीराम हृदयम्
Sri Shankaracharya / श्रीशंकराचार्य
Sri Tulsidas / श्रीतुलसीदास
Sri Vallabhacharya / श्रीवल्लभाचार्य
Subhashitani / सुभाषितानि
Upanishad / उपनिषद्
General
Bookmarks
Getting Books
Hindi Alphabets
Important Books
Miscellaneous
Sitemap

Home/मुख्य पृष्ठ > Sri Vallabhacharya / श्रीवल्लभाचार्य >

ChatuShloki / चतु:श्लोकी

चतु:श्लोकी (मूल संस्कृत)	चतु:श्लोकी (हिंदी भावानुवाद)	Chatu Shloki (English)
सर्वदा सर्वभावेन भजनीयो व्रजाधिप:। स्वस्यायमेव धर्मो हि नान्य: क्वापि कदाचन॥१॥	सभी समय, सब प्रकार से व्रज के राजा श्रीकृष्ण का ही स्मरण करना चाहिए। केवल यह ही धर्म है, इसके अतिरिक्त और कुछ भी नहीं॥१॥	At all times, in all ways, we must worship the Lord of Vraj Sri Krishna only. This is the only religion and nothing else besides it.॥1॥
एवं सदा स्वकर्तव्यं स्वयमेव करिष्यति। प्रभु: सर्व समर्थो हि ततो निश्चिन्ततां व्रजेत् ॥२॥	इस प्रकार अपने कर्तव्यों का हमेशा पालन करते रहना चाहिए, प्रभु सर्व समर्थ हैं इसको ध्यान रखते हुए निश्चिन्ततापूर्वक रहें॥२॥	This way we should always do our duty. Remembering that Lord Sri Krishna is omnipotent, live without worries. (He will take care of everything.)॥2॥
यदि श्रीगोकुलाधीशो धृत: सर्वात्मना हृदि। तत: किमपरं ब्रूहि लोकिकैर्वैदिकैरपि॥३॥	यदि तुमने सबके आत्मस्वरूप गोकुल के राजा श्रीकृष्ण को अपने हृदय में धारण किया हुआ है, फिर क्या उससे बढ़कर कोई और सांसारिक और वैदिक कार्य है॥३॥	If the soul of everyone, king of Gokul Sri Krishna lives in your heart, what else remains to be done whether worldly or spiritual.॥3॥
अत: सर्वात्मना शश्र्वतगोकुलेश्र्वर पादयो:। स्मरणं भजनं चापि न त्याज्यमिति मे मति:॥४॥	अत: सबके आत्मस्वरूप गोकुल के शाश्र्वत ईश्र्वर श्रीकृष्ण के चरणों का स्मरण और भजन कभी भी छोड़ना नहीं चाहिए, ऐसा मेरा (श्री वल्लभाचार्य का) विचार है॥४॥	So one should never stop worship and meditation on the feet of Lord Sri Krishna, the eternal soul of all and the God of Gokul. This is the opinion of Sri Vallabhacharya.॥4॥

Comments

You do not have permission to add comments.

Navigation
- Home/मुख्य पृष्ठ
  - Ashtavakra Gita / अष्टावक्र गीता
  - Bhagwat / भागवत
  - Chatuh Shloki Bhagwat / चतु: श्लोकी भागवत
  - Gita / गीता
  - Shikshashtakam / शिक्षाष्टकं
  - SoundBytes / सुवचन
  - Sri Ram Hrudayam / श्रीराम हृदयम्
  - Sri Shankaracharya / श्रीशंकराचार्य
  - Sri Tulsidas / श्रीतुलसीदास
  - Sri Vallabhacharya / श्रीवल्लभाचार्य
  - Subhashitani / सुभाषितानि
  - Upanishad / उपनिषद्
- General
  - Bookmarks
  - Getting Books
  - Hindi Alphabets
  - Important Books
- Miscellaneous
- Sitemap

Home/मुख्य पृष्ठ > Sri Vallabhacharya / श्रीवल्लभाचार्य >

Krishnashray / कृष्णाश्रय

कृष्णाश्रय (मूल संस्कृत)	कृष्णाश्रय (हिंदी भावानुवाद)	Krishnashray (English)
सर्वमार्गेषु नष्टेषु कलौ च खलधर्मिणि। पाषण्डप्रचुरे लोके कृष्ण एव गतिर्मम॥१॥	कलियुग में धर्म के सभी मार्ग नष्ट हो गए हैं, विश्व में अधर्म और पाखंड का बाहुल्य है, ऐसे समय में केवल श्रीकृष्ण ही मेरा आश्रय हैं॥१॥	In this age of Kali, all the paths leading to God are destroyed; non-righteousness and hypocrisy is prevalent everywhere. Lord Shri Krishna is my only refuge in these difficult times.॥1॥
म्लेच्छाक्रान्तेषु देशेषु पापैकनिलयेषु च। सत्पीडाव्यग्रलोकेषु कृष्ण एव गतिर्मम॥२॥	दुर्जनों से आक्रांत (परेशान) देशों में, पाप पूर्ण स्थानों में, सज्जनों की पीड़ा से व्यग्र संसार में केवल श्रीकृष्ण ही मेरा आश्रय हैं॥२॥	Wicked people rule and oppress others in all places. These places have become cursed.The suffering of noble men has reached its limits. At such a time, the Lord Shri Krishna is my only refuge.॥2॥
गंगादितीर्थवर्येषु दुष्टैरेवावृतेष्विह। तिरोहिताधिदेवेषु कृष्ण एव गतिर्मम॥३॥	गंगा आदि प्रमुख तीर्थ भी दुष्टों द्वारा घिरे हुए हैं, प्रत्यक्ष देवस्थान लुप्त हो गए हैं, ऐसे समय में केवल श्रीकृष्ण ही मेरा आश्रय हैं॥३॥	Principal holy places like the Ganga etc. are surrounded by the wicked. The gods residing in such places have abandoned them. At such a time, the Lord Shri Krishna is my only refuge.॥3॥
अहंकारविमूढेषु सत्सु पापानुवर्तिषु। लोभपूजार्थयत्नेषु कृष्ण एव गतिर्मम॥४॥	अहंकार से मोहित हुए सज्जन व्यक्ति भी पाप का अनुसरण कर रहे हैं और लोभ वश ही पूजा करते हैं, ऐसे समय में केवल श्रीकृष्ण ही मेरा आश्रय हैं॥४॥	Even the righteous people have become full of pride and are following sinful path. People pray to God for their selfish benefits. At such a time, the Lord Krishna is my only refuge.॥4॥
अपरिज्ञाननष्टेषु मन्त्रेष्ववृतयोगिषु। तिरोहितार्थवेदेषु कृष्ण एव गतिर्मम॥५॥	मंत्र ज्ञान नष्ट हो गया है, योगी नियमों का पालन न करने वाले हो गए हैं, वेदों का वास्तविक अर्थ लुप्त हो गया है, ऐसे समय में केवल श्रीकृष्ण ही मेरा आश्रय हैं॥५॥	Secret knowledge of Mantras has disappeared, yogis do not live disciplined life, real meaning of Vedas is forgotten. At such a time, the Lord Krishna is my only refuge.॥5॥
नानावादविनष्टेषु सर्वकर्मव्रतादिषु। पाषण्डैकप्रयत्नेषु कृष्ण एव गतिर्मम॥६॥	भिन्न-भिन्न प्रकार के मतों के कारण शुभ कर्म और व्रत आदि का नाश हो गया है, पाखंडपूर्ण कर्मों का ही आचरण हो रहा है, ऐसे समय में केवल श्रीकृष्ण ही मेरा आश्रय हैं॥६॥	Due to various sects, fasts and other pious duties are not performed. Sacred acts are not done with pure heart. At such a time, the Lord Krishna is my

		only refuge.॥6॥
अजामिलादिदोषाणां नाशकोऽनुभवे स्थितः। ज्ञापिताखिलमाहात्म्यः कृष्ण एव गतिर्मम॥७॥	आपका नाम अजामिल आदि के दोषों का नाश करने वाला है, ऐसा सबने सुना है, आपके ऐसे संपूर्ण माहात्म्य को जानने के बाद, केवल आप श्रीकृष्ण ही मेरा आश्रय हैं॥७॥	Everybody is aware that by taking your holy name Ajamil and others have become free from their sins. Knowing your infinite kindness, O! Lord Krishna, you are my only refuge.॥7॥
प्राकृताः सकल देवा गणितानन्दकं बृहत्। पूर्णानन्दो हरिस्तस्मात्- कृष्ण एव गतिर्मम॥८॥	सभी देवता प्रकृति के अंतर्गत हैं, विराट का आनंद भी सीमित है, केवल श्रीहरि पूर्ण आनंद स्वरुप हैं, अतः केवल श्रीकृष्ण ही मेरा आश्रय हैं॥८॥	All other deities are under control of Nature(Maya). Even the pleasure of Virat(Brahm) is limited in scope. Only Sri Hari bestows infinite bliss. Hence, Lord Krishna is my only refuge.॥8॥
विवेकधैर्यभक्त्यादि रहितस्य विशेषतः। पापासक्तस्य दीनस्य कृष्ण एव गतिर्मम॥९॥	विवेक, धैर्य, भक्ति आदि से रहित, विशेष रूप से पाप में आसक्त मुझ दीन के लिए केवल श्रीकृष्ण ही आश्रय हैं॥९॥	Especially for someone like me who is without discrimination, patience and devotion and constantly attached to sins and incapable, Lord Shri Krishna is the only refuge.॥9॥
सर्वसामर्थ्यसहितः सर्वत्रैवाखिलार्थकृत्। शरणस्थमुद्धारं कृष्णं विज्ञापयाम्यहम्॥१०॥	अनंत सामर्थ्यवान, सर्वत्र सभी प्रकार की मनोकामना पूर्ण करने वाले, शरणागतों का उद्धार करने वाले श्रीकृष्ण की मैं वंदना करता हूँ॥१०॥	I worship Lord Krishna, who is all powerful, omnipresent and bestower of all benefits and saviour of all those who seek his protection.॥10॥
कृष्णाश्रयमिदं स्तोत्रं यः पठेत्कृष्णसन्निधौ। तस्याश्रयो भवेत्कृष्ण इति श्रीवल्लभोऽब्रवीत्॥११॥	श्रीकृष्ण के आश्रय में और उनकी मूर्ति के समीप जो इस स्तोत्र का पाठ करता है उसके आश्रय श्रीकृष्ण हो जाते हैं, ऐसा श्रीवल्लभाचार्य का कथन है॥११॥	Whosoever recites this Krishnashraya considering Sri Krishna as his only refuge and in the presence of his statue, he will be protected by Lord Sri Krishna himself. This is the promise of Sri Vallabhacharya.॥11॥

Comments

You do not have permission to add comments.

Navigation
- Home/मुख्य पृष्ठ
  - Ashtavakra Gita / अष्टावक्र गीता
  - Bhagwat / भागवत
  - Chatuh Shloki Bhagwat / चतुः श्लोकी भागवत
  - Gita / गीता
  - Shikshashtakam / शिक्षाष्टकं
  - SoundBytes / सुवचन
  - Sri Ram Hrudayam / श्रीराम हृदयम्
  - Sri Shankaracharya / श्रीशंकराचार्य
  - Sri Tulsidas / श्रीतुलसीदास
  - Sri Vallabhacharya / श्रीवल्लभाचार्य
  - Subhashitani / सुभाषितानि
  - Upanishad / उपनिषद्
- General
  - Bookmarks
  - Getting Books
  - Hindi Alphabets
  - Important Books
- Miscellaneous
- Sitemap

Home/मुख्य पृष्ठ > Sri Vallabhacharya / श्रीवल्लभाचार्य >

Krishnashtakam / कृष्णाष्टकं

ग्रन्थ परिचय

कृष्णाष्टकं में श्रीराधारानी और श्रीकृष्ण के सनातन प्रेम का मर्मस्पर्शी वर्णन महाप्रभु श्रीवल्लभाचार्य जी द्वारा किया गया है। तात्त्विक दृष्टि से एक होते हुए भी श्रीराधारानी और श्रीकृष्ण भक्तों के सुख हेतु प्रेम लीला करने के लिए जैसे दो हो जाते हैं। श्रीकृष्ण को शीघ्र प्रसन्न करने के लिए श्रीराधारानी का और श्रीराधारानी को शीघ्र प्रसन्न करने के लिए श्रीकृष्ण का भजन करना चाहिए क्योंकि दोनों ही दूसरे का ज्यादा ध्यान रखते हैं। मनुष्य जीवन का एकमात्र उद्देश्य इनके चरणकमलों की भक्ति प्राप्त करना ही है और इसके लिए अनन्य प्रेम के अतिरिक्त कोई मार्ग नहीं है। कृष्णाष्टकं को युगलाष्टकं भी कहा जाता है क्योंकि इसके प्रत्येक पद में श्रीकृष्ण और श्रीराधारानी दोनों का ही वर्णन किया गया है। कृष्णाष्टकं पुष्टिमार्गीय वैष्णवों के नित्य पठनीय षोडश ग्रंथों में अप्रतिम स्थान रखता है। श्रद्धापूर्वक इसका नित्य पाठ करने से मनुष्य प्रभु के भक्तों में अग्रगण्य हो जाता है और गोलोकधाम की प्राप्ति करता है। ॥श्रीहरि॥

Introduction

In Krishnashtakam, Mahaprabhu Sri Vallabhcharya very sensitively depicts the eternal love of Sri Radha and Lord Sri Krishna. Fundamentally, Sri Radha and Lord Sri Krishna are one only but for the pleasure of their devotees they appear to be divided in two to enact divine love. To please Lord Krishna fast, one should worship Sri Radha and to please Sri Radha fast, one should worship Sri Krishna because they consider their partner before self. The single objective of human life is to get devotion for the lotus feet of this couple and there is no other way to achieve this but undivided love. Krishnashtakam is also known as Yugalshtakam as every shloka of it describes Sri Krishna and Sri Radha both. Krishnashtakam has incomparable place among the sixteen sacred books of Pushti Marg Vaishnavas. If a devotee chants it regularly with reverence, he becomes foremost of the devotees of Lord Krishna and attains the eternal Golokdham. ॥Sri Hari॥

कृष्णाष्टकम् (मूल संस्कृत)	कृष्णाष्टकम् (हिंदी भावानुवाद)	Krishnashtakam (English)
कृष्णप्रेममयी राधा राधाप्रेममयो हरिः। जीवनेन धने नित्यं राधाकृष्णगतिर्मम ॥१॥	श्रीराधारानी श्रीकृष्ण प्रेम से ओत प्रोत हैं और श्रीकृष्ण श्रीराधारानी के प्रेम से। जीवन के नित्य धनस्वरूप श्रीराधाकृष्ण मेरा आश्रय हों ॥१॥	Sri Radha is immersed in love of Sri Krishna and Sri Krishna is immersed in love of Sri Radha. Like eternal wealth, Sri Radha and Sri Krishna be my only shelter in life.॥1॥
कृष्णस्य द्रविणं राधा राधायाः द्रविणं हरिः। जीवनेन धने नित्यं राधाकृष्णगतिर्मम ॥२॥	श्रीकृष्ण का धन श्रीराधारानी जी हैं और श्रीराधारानी जी का धन श्रीकृष्ण। जीवन के नित्य धनस्वरूप श्रीराधाकृष्ण मेरा आश्रय हों॥२॥	Sri Krishna considers Sri Radha as his only wealth and Sri Radha considers Sri Krishna as her only wealth. Like eternal wealth, Sri Radha and Sri Krishna be my only shelter in life.॥2॥
कृष्णप्राणमयी राधा राधाप्राणमयो हरिः। जीवनेन धने नित्यं राधाकृष्णगतिर्मम ॥३॥	श्रीकृष्ण के प्राण श्रीराधारानी जी में बसते हैं और श्रीराधारानी जी के प्राण श्रीकृष्ण में। जीवन के नित्य धनस्वरूप श्रीराधाकृष्ण मेरा आश्रय हों ॥३॥	Sri Radha is the life of Sri Krishna, and Sri Krishna is the life of Sri Radha. Like eternal wealth, Sri Radha and Sri Krishna be my only shelter in life.॥3॥
कृष्णद्रवामयी राधा राधाद्रवामयो हरिः। जीवनेन धने नित्यं राधाकृष्णगतिर्मम ॥४॥	श्रीकृष्ण के नाम से श्रीराधारानी जी प्रसन्न होती हैं और श्रीराधारानी जी के नाम से श्रीकृष्ण। जीवन के नित्य धनस्वरूप श्रीराधाकृष्ण मेरा आश्रय हों ॥४॥	Sri Radha obliges on worshipping Sri Krishna and Krishna obliges on worshipping Sri Radha. Like eternal wealth, Sri Radha and Sri Krishna be my only shelter in life.॥4॥
कृष्ण गेहे स्थिता राधा राधा गेहे स्थितो हरिः। जीवनेन धने नित्यं राधाकृष्णगतिर्मम ॥५॥	(मन से) श्रीराधारानी जी श्रीकृष्ण के घर में स्थित हैं और श्रीकृष्ण श्रीराधारानी जी के घर में। जीवन के नित्य धनस्वरूप श्रीराधाकृष्ण मेरा आश्रय हों ॥५॥	Sri Radha by mind, stays in the home of Sri Krishna, and Sri Krishna by mind, stays in the home of Sri Radha. Like eternal wealth, Sri Radha and Sri Krishna be my only shelter in life.॥5॥
कृष्णचित्तस्थिता राधा राधाचित्स्थितो हरिः। जीवनेन धने नित्यं राधाकृष्णगतिर्मम ॥६॥	श्रीराधारानी जी के मन में श्रीकृष्ण स्थित हैं और श्रीकृष्ण के मन में श्रीराधारानी जी। जीवन के नित्य धनस्वरूप श्रीराधाकृष्ण मेरा आश्रय हों ॥६॥	Sri Radha stays in the heart of Sri Krishna, and Sri Krishna stays in the heart of Sri Radha. Like eternal wealth, Sri Radha and Sri Krishna be my only shelter in life.॥6॥
नीलाम्बरा धरा राधा पीताम्बरो धरो हरिः। जीवनेन धने नित्यं राधाकृष्णगतिर्मम ॥७॥	श्रीराधारानी जी नीले वस्त्र धारण करती हैं और श्रीकृष्ण पीले। जीवन के नित्य धनस्वरूप श्रीराधाकृष्ण मेरा आश्रय हों॥७॥	Sri Radha wears blue apparel and Sri Krishna wears yellow apparel. Like eternal wealth, Sri Radha and Sri Krishna be my only shelter in life.॥7॥
वृन्दावनेश्वरी राधा कृष्णो वृन्दावनेश्वरः। जीवनेन धने नित्यं राधाकृष्णगतिर्मम ॥८॥	वृन्दावन की देवी हैं श्रीराधारानी जी और वृन्दावन के देवता हैं श्रीकृष्ण। जीवन के नित्य धनस्वरूप श्रीराधाकृष्ण मेरा आश्रय हों॥८॥	Sri Radha is the Goddess of Vrindavan and Sri Krishna is the God of Vrindavan. Like eternal wealth, Sri Radha and Sri Krishna be my only shelter in life.॥8॥

Comments

You do not have permission to add comments.

Navigation
Home/मुख्य पृष्ठ
Ashtavakra Gita / अष्टावक्र गीता
Bhagwat / भागवत
Chatuh Shloki Bhagwat / चतुः श्लोकी भागवत
Gita / गीता
Shikshashtakam / शिक्षाष्टकं
SoundBytes / सुवचन
Sri Ram Hrudayam / श्रीराम हृदयम्
Sri Shankaracharya / श्रीशंकराचार्य
Sri Tulsidas / श्रीतुलसीदास
Sri Vallabhacharya / श्रीवल्लभाचार्य
Subhashitani / सुभाषितानि
Upanishad / उपनिषद्
General
Bookmarks
Getting Books
Hindi Alphabets
Important Books
Miscellaneous
Sitemap

Home/मुख्य पृष्ठ > Sri Vallabhacharya / श्रीवल्लभाचार्य >

Madhurashtakam / मधुराष्टकं

ग्रन्थ परिचय

मधुराष्टकं में महाप्रभु श्रीवल्लभाचार्य ने बालरूप श्रीकृष्ण की मधुरता का मधुरतम वर्णन किया है। श्रीकृष्ण के प्रत्येक अंग एवं गतिविधि मधुर है और उनके संयोग से अन्य सजीव और निर्जीव वस्तुएं भी मधुरता को प्राप्त कर लेती हैं। इस सृष्टि में जो कुछ भी मधुरता है उसको श्रीकृष्ण की मधुरता का एक अंश समझते हुए भक्तों को निरंतर श्रीमाखनचोर का स्मरण करना चाहिए। मधुराष्टकं पुष्टिमार्गीय वैष्णवों के नित्य पठनीय ग्रंथों में अपूर्व स्थान रखता है, इसके नित्य पठन से व्यक्ति सब का प्रिय हो जाता है और भगवान श्रीकृष्ण की पराभक्ति प्राप्त कर लेता है। मधुराष्टकं की मधुरता का वर्णन कर पाना संभव नहीं है, संभवतः श्रीकृष्ण स्तुति में इस पृथ्वी पर लिखा गया यह सबसे मधुर अष्टक है। प्रभु के परमप्रिय भक्त महाप्रभु श्रीवल्लभाचार्य जी को शत कोटि नमन! ॥श्रीहरि॥

Introduction

Madhurashtakam is the sweetest description of the sweetness of child God, Sri Krishna by Mahaprabhu Sri Vallabhcharya. Every body part and all the actions of Sri Krishna are sweet and by his sweet contact anything living or non-living becomes sweet. Whatever sweetness we see in this material world should be understood as a small fraction of the sweetness of Lord Sri Krishna. So the devotees of Lord Sri Krishna should continuously remember the butter stealing form of his. Madhurashtakam has extraordinary place among the sacred books of Pushti Marg Vaishnavas. By reading this regularly, a devotee becomes dear to all and gets supreme devotion towards Lord Sri Krishna. It is not possible to describe the sweetness of Madhurashtakam; probably it contains the sweetest eight verses written in worship of Lord Sri Krishna on this earth. Hundred billion salutations to the dearest devotee of Lord, Mahaprabhu Sri Vallabhcharya. ॥Sri Hari॥

मधुराष्टकम् (मूल संस्कृत)	मधुराष्टकम् (हिंदी भावानुवाद)	Madhurashtakam (English)
अधरं मधुरं वदनं मधुरं नयनं मधुरं हसितं मधुरम्। हृदयं मधुरं गमनं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम् ॥१॥	आपके होंठ मधुर हैं, आपका मुख मधुर है, आपकी ऑंखें मधुर हैं, आपकी मुस्कान मधुर है, आपका हृदय मधुर है, आपकी चाल मधुर है, मधुरता के ईश हे श्रीकृष्ण! आपका सब कुछ मधुर है ॥१॥	O Krishna! your lips are sweet, your face is sweet, your eyes are sweet, your laugh is sweet, your heart is sweet, your gait is sweet. O Lord of sweetness! everything

		about you is sweet only.॥1॥
वचनं मधुरं चरितं मधुरं वसनं मधुरं वलितं मधुरम्। चलितं मधुरं भ्रमितं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम् ॥२॥	आपका बोलना मधुर है, आपके चरित्र मधुर हैं, आपके वस्त्र मधुर हैं, आपका तिरछा खड़ा होना मधुर है, आपका चलना मधुर है, आपका घूमना मधुर है, मधुरता के ईश हे श्रीकृष्ण! आपका सब कुछ मधुर है ॥२॥	O Krishna! your words are sweet, your acts are sweet, your clothes are sweet, your bent posture is sweet, your movements are sweet, your roaming is sweet. O Lord of sweetness! everything about you is sweet only.॥2॥
वेणुर्मधुरो रेणुर्मधुरः पाणिर्मधुरः पादौ मधुरौ। नृत्यं मधुरं सख्यं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम् ॥३॥	आपकी बांसुरी मधुर है, आपके लगाये हुए पुष्प मधुर हैं, आपके हाथ मधुर हैं, आपके चरण मधुर हैं , आपका नृत्य मधुर है, आपकी मित्रता मधुर है, मधुरता के ईश हे श्रीकृष्ण! आपका सब कुछ मधुर है ॥३॥	O Krishna! your flute is sweet, your garland is sweet, your hands are sweet, your feet are sweet, your dance is sweet, your friendship is sweet.O Lord of sweetness! everything about you is sweet only.॥3॥
गीतं मधुरं पीतं मधुरं भुक्तं मधुरं सुप्तं मधुरम् । रूपं मधुरं तिलकं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम् ॥४॥	आपके गीत मधुर हैं, आपका पीना मधुर है, आपका खाना मधुर है, आपका सोना मधुर है, आपका रूप मधुर है, आपका टीका मधुर है, मधुरता के ईश हे श्रीकृष्ण! आपका सब कुछ मधुर है ॥४॥	O Krishna! your songs are sweet, your drinking is sweet, your eating is sweet, your sleeping is sweet, your beauty is sweet, your mark of forehead is sweet. O Lord of sweetness! everything about you is sweet only.॥4॥
करणं मधुरं तरणं मधुरं हरणं मधुरं रमणं मधुरम्। वमितं मधुरं शमितं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम् ॥५॥	आपके कार्य मधुर हैं, आपका तैरना मधुर है, आपका चोरी करना मधुर है, आपका प्यार करना मधुर है, आपके शब्द मधुर हैं, आपका शांत रहना मधुर है, मधुरता के ईश हे श्रीकृष्ण! आपका सब कुछ मधुर है ॥५॥	O Krishna! your deeds are sweet, your floating is sweet, your act of stealing is sweet, your love is sweet, your words are sweet, your silence is sweet. O Lord of sweetness! everything about you is sweet only.॥5॥
गुंजा मधुरा माला मधुरा यमुना मधुरा वीची मधुरा। सलिलं मधुरं कमलं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम् ॥६॥	आपकी घुंघची मधुर है, आपकी माला मधुर है, आपकी यमुना मधुर है, उसकी लहरें मधुर हैं, उसका पानी मधुर है, उसके कमल मधुर हैं, मधुरता के ईश हे श्रीकृष्ण! आपका सब कुछ मधुर है ॥६॥	O Krishna! your berries are sweet, your garland is sweet, your river Yamuna is sweet, her waves are sweet, her water is sweet, her lotus are sweet.O Lord of sweetness! everything about you is sweet only.॥6॥
गोपी मधुरा लीला मधुरा युक्तं मधुरं मुक्तं मधुरम् । दृष्टं मधुरं शिष्टं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम् ॥७॥	आपकी गोपियाँ मधुर हैं, आपकी लीला मधुर है, आप उनके साथ मधुर हैं, आप उनके बिना मधुर हैं, आपका देखना मधुर है, आपकी शिष्टता मधुर है, मधुरता के ईश हे श्रीकृष्ण! आपका सब कुछ मधुर है ॥७॥	O Krishna! your Gopis are sweet, your playing is sweet, with them you are sweet, without them you are sweet, your glance is sweet, your manners are sweet. O Lord of sweetness! everything about you is sweet only.॥7

गोपा मधुरा गावो मधुरा
यष्टिर्मधुरा सृष्टिर्मधुरा।
दलितं मधुरं फलितं मधुरं
मधुराधिपतेरखिलं मधुरम् ॥८॥

आपके गोप मधुर हैं, आपकी गायें मधुर हैं, आपकी छड़ी मधुर है, आपकी सृष्टि मधुर है, आपका विनाश करना मधुर है, आपका वर देना मधुर है, मधुरता के ईश हे श्रीकृष्ण! आपका सब कुछ मधुर है ॥८॥

O Krishna! your friends are sweet, your cows are sweet, your stick is sweet, your creation is sweet, your destruction is sweet, your boons are sweet. O Lord of sweetness! everything about you is sweet only. ॥8॥

Comments

You do not have permission to add comments.

Navaratnam / नवरत्नं

नवरत्नं (मूल संस्कृत)	नवरत्नं (हिंदी भावानुवाद)	Navaratnam (English)
चिन्ता कापि न कार्या निवेदितात्मभिः कदापीति। भगवानपि पुष्टिस्थो न करिष्यति लौकिकीं च गतिम्॥१॥	स्वयं को श्रीकृष्ण को समर्पण करते समय कभी भी किसी प्रकार की भी चिंता न करें, भगवान प्रेम और लोक व्यवहार दोनों का संरक्षण करेंगे॥१॥	Once surrendered to Sri Krishna, one should never ever get worried at all in any situation. The Lord will definitely take care of the spiritual and worldly life.॥1॥
निवेदनं तु स्मर्तव्यं सर्वथा ताहृशैर्जनैः। सर्वेश्वरश्च सर्वात्मा निजेच्छातः करिष्यति॥२॥	इस प्रकार के भक्त केवल अपने समर्पण को स्मरण रखें, शेष सब कुछ सबके ईश्वर और सबके आत्मा अपनी इच्छा के अनुसार करेंगे ॥२॥	Such devotees should only remember their surrender to Lord and nothing else. The rest will be taken care of by the soul of all and the God of all.॥2॥
सर्वेषां प्रभु संबंधो न प्रत्येकमिति स्थितिः। अतोऽन्यविनियोगेऽपि चिन्ता का स्वस्य सोऽपिचेत्॥३॥	ईश्वर के साथ सबका सम्बन्ध है पर सबकी उनमें निरंतर स्थिति नहीं है, अतः दूसरों की उनमें स्थिति न होने पर चिंता न करें, वे स्वयं ही जानेंगे॥३॥	Everyone is connected to Lord, but not everyone continuously remembers Him. So don't worry about others, they will know it by themselves.॥3॥
अज्ञानादथ वा ज्ञानात् कृतमात्मनिवेदनम्। यैः कृष्णसात्कृतप्राणैस्- तेषां का परिदेवना॥४॥	जिन्होंने अज्ञान या ज्ञान पूर्वक श्रीकृष्ण को आत्म समर्पण कर दिया है, अपने प्राणों को उनके अधीन कर दिया है, उनको क्या दुःख हो सकता है॥४॥	He, who has knowingly or unknowingly offered himself to Lord and engrossed his life in love for Sri Krishna, how can he be ever sad.॥4॥
तथा निवेदने चिन्ता त्याज्या श्रीपुरुषोत्तमे। विनियोगेऽपि सा त्याज्या समर्थो हि हरिः स्वतः॥५॥	अतःचिंता को त्याग कर श्रीकृष्ण को समर्पण करें, पूर्ण समर्पण न होने पर भी चिंता को त्याग दें, श्रीहरि निश्चित रूप से सर्व समर्थ हैं॥५॥	So, leave aside all the worries, surrender to Lord Krishna. Even if, surrender is incomplete, do not bother as Sri Hari is definitely all powerful in all ways.॥5॥
लोके स्वास्थ्यं तथा वेदे हरिस्तु न करिष्यति। पुष्टिमार्गस्थितो यस्मात्- साक्षिणो भवताऽखिलाः॥६॥	पुष्टि मार्ग में स्थित भक्त के लोक, स्वास्थ्य और वेद का पालन निश्चित रूप से सबके साक्षी श्रीहरि ही करेंगे॥६॥	In this path of grace, all witnessing Lord Krishna will definitely take care of his devotee's health, worldly and spiritual matters.॥6॥

सेवाकृतिर्गुरोराज्ञा- बाधनं वा हरीच्छया। अतः सेवा परं चित्तं विधाय स्थीयतां सुखम्॥७॥	गुरु की आज्ञा के अनुरूप अथवा श्रीहरि की इच्छा के अनुसार प्रभु-सेवा ही कर्तव्य है, अतः परमात्मा की सेवा में चित्त को स्थिर करके सुख से रहें॥७॥	As per the directions of Guru or by the wish of Lord Krishna, service of the Lord is the only duty. So keep your mind fixed in service of God and stay peacefully.॥7॥
चित्तोद्वेगं विधायापि हरिर्यद्यत् करिष्यति। तथैव तस्य लीलेति मत्वा चिन्तां द्रुतं त्यजेत॥८॥	चिंता और उद्वेग में संयम रख कर और ऐसा मान कर कि श्रीहरि जो जो भी करेंगे वह उनकी लीला मात्र है, चिंता को शीघ्र त्याग दें॥८॥	Have patience in worries and distress and assuming all the acts of God as his play, promptly stop worrying. ॥8॥
तस्मात्सर्वात्मना नित्यं श्रीकृष्णः शरणं मम। वदद्भिरेव सततं स्थेयमि- त्येव मे मतिः॥९॥	अतः मैं सदैव सबके आत्मा श्रीकृष्ण की शरण में हूँ। इस प्रकार बोलते हुए ही निरंतर रहें, ऐसा मेरा निश्चित मत है॥ ९॥	So keep reciting and remembering that the soul of all, Lord Krishna is my only refuge at all times. This is my definite opinion. ॥9॥

Comments

You do not have permission to add comments.

Navigation
- Home/मुख्य पृष्ठ
  - Ashtavakra Gita / अष्टावक्र गीता
  - Bhagwat / भागवत
  - Chatuh Shloki Bhagwat / चतु: श्लोकी भागवत
  - Gita / गीता
  - Shikshashtakam / शिक्षाष्टकं
  - SoundBytes / सुवचन
  - Sri Ram Hrudayam / श्रीराम हृदयम्
  - Sri Shankaracharya / श्रीशंकराचार्य
  - Sri Tulsidas / श्रीतुलसीदास
  - Sri Vallabhacharya / श्रीवल्लभाचार्य
  - Subhashitani / सुभाषितानि
  - Upanishad / उपनिषद्
- General
  - Bookmarks
  - Getting Books
  - Hindi Alphabets
  - Important Books
- Miscellaneous
- Sitemap

Home/मुख्य पृष्ठ > Sri Vallabhacharya / श्रीवल्लभाचार्य >

Nirodh Lakshanam / निरोध लक्षणं

निरोध लक्षणं (संस्कृत)	निरोध लक्षणं (हिंदी)	Nirodh Lakshanam (English)
यच्च दुःखं यशोदाया नन्दादीनां च गोकुले। गोपिकानां तु यद्- दुःखं स्यान्मम क्वचित्॥१॥	श्रीकृष्ण से वियोग होने पर गोकुल में श्रीमती यशोदा जी, श्रीनन्द जी और दूसरों को जैसा दुःख होता है और जैसा गोपियों का दुःख है, किसी प्रकार वैसा ही दुःख मुझको भी हो जाये॥१॥	As Yashoda, Nand and others in Gokul feel sad on separation from Sri Krishna, and specially as Gopis feel sad, may similar sadnees happen to me somehow.॥1॥
गोकुले गोपिकानां च सर्वेषां वृजवासिनाम्। यत्सुखं समभूत्तन्मे भगवान् किं विधास्यति॥२॥	श्रीकृष्ण के संयोग से गोकुल में जो सुख गोपियों को और समस्त वृजवासियों को हुआ, वह सुख श्रीकृष्ण मुझे कब देंगे॥२॥	As Gopis and others in Gokul experience bliss, due to association with Sri Krishna; when will that pleasure be given to me by Sri Krishna.॥2॥
उद्धवगमने जात उत्सवः सुमहान्यथा। वृन्दावने गोकुले वा तथा मे मनसि क्वचित्॥३॥	वृन्दावन और गोकुल में, उद्धव के आने से जैसा सुन्दर और महान उत्सव हुआ, वैसा किसी प्रकार मेरे मन में हो जाये॥३॥	As a beautiful magnanimous celebration happened in Gokul and Vrindavan due to arrival of Uddhava, may similar celebration happen in my heart somehow.॥3॥
महतां कृपया यावद् भगवान् दययिष्यति। तावदानन्दसन्दोहः कीर्त्यमानः सुखाय हि॥४॥	जब श्रीकृष्ण महापुरुषों की कृपा प्रदान करेंगे, तब उनके द्वारा किया गया आनंद-समुद्र श्रीकृष्ण का कीर्तन ही सुख का कारण होगा॥४॥	When Sri Krishna will grace us with company of his great devotees, their singing of blissful Sri Krishna's glory will lead us to pleasure.॥4॥
महतां कृपया यद्वत् कीर्तनं सुखदं सदा। न तथा लौकिकानां तु स्निग्धभोजनरूक्षवत्॥५॥	महापुरुषों द्वारा कृपा करके किया गया श्रीकृष्ण का कीर्तन जैसा सुख देने वाला होता है वैसा लौकिक लोगों द्वारा किया हुआ नहीं, दोनों में सरस और नीरस भोजन जैसा अंतर है॥५॥	Glorification of Sri Krishna done by great devotees out of their grace produces great pleasure which is absent if it is done by worldly people. The difference between the two is like the difference between tasty and tasteless food.॥5॥
गुणगाने सुखावाप्ति- र्गोविन्दस्य प्रजायते। यथा तथा शुकादीनां नैवात्मनि कुतोऽन्यतः॥६॥	शुकदेव आदि भक्तों में कीर्तन के द्वारा श्रीकृष्ण के संयोग का जैसा सुख उत्पन्न हुआ वैसा तो आत्म ज्ञान से भी संभव नहीं, फिर और तो वैसा सुख कहाँ हो सकता है॥६॥	Shukadeva and others experienced that much bliss by merely chanting glory of Sri Krishna, which is not possible

		even through self-knowledge. How else then can it be attained by any other means!॥6॥
क्लिश्यमानान्जनान् दृष्ट्वा कृपायुक्तो यदा भवेत्। तदा सर्वसदानन्दं हृदिस्थं निर्गतं बहिः॥७॥	जब लोगों के दु:ख देख कर श्रीकृष्ण द्रवित हो जाते हैं, तब सबके हृदय में रहने वाले वे सनातन आनंद स्वरूप श्रीकृष्ण बाहर प्रकट हो जाते हैं॥७॥	Sri Krishna becomes graceful on seeing pain of his devotees. Thus, Sri Krishna, who is present in everybody's heart, eternal and blissful reveals himself.॥7॥
सर्वानन्दमयस्यापि कृपानन्दः सुदुर्लभः। हृद्गतः स्वगुणान् श्रुत्वा पूर्णः प्लावयते जनान्॥८॥	यद्यपि प्रभु सनातन आनंद स्वरूप हैं पर उनकी कृपा रूपी आनंद की प्राप्ति कठिन है। हृदय में रहने वाले वे श्रीकृष्ण अपने गुणों का कीर्तन सुनकर अपने भक्तों को आनंद समुद्र से सराबोर कर देते हैं॥८॥	Though Sri Krishna is bliss himself, it is difficult to get his grace. The Lord who abides in everybody's heart on hearing his glory, immerse his devotees completely in ocean of bliss.॥8॥
तस्मात्सर्वं परित्यज्य निरुद्धैः सर्वदा गुणाः। सदानन्दपरैर्गेयाः सच्चिदानन्दता ततः॥९॥	इसलिए सब कुछ छोड़ कर, विषयों का निरंतर दमन करते हुए, उस सत्य, चेतन और आनंद स्वरूप परमात्मा का सदा गुणगान करें॥९॥	So leaving everything aside, controlling the senses all the time, one should always sing the glory of that eternal, conscious and blissful lord. ॥9॥
अहं निरुद्धो रोधेन निरोधपदवीं गतः। निरुद्धानां तु रोधाय निरोधं वर्णयामि ते॥१०॥	मैं (श्रीवल्लभाचार्य जी), विषयों का निरंतर दमन करते हुए, वास्तविक निरोध को उपलब्ध हुआ हूँ, अब निरोध को उपलब्ध होने की इच्छा करने वालों के लिए उसका वर्णन करता हूँ॥१०॥	Through continuous control of my senses, I, Vallabh, have attained the seat of real control. Now I describe it for those who wish to attain it.॥10॥
हरिणा ये विनिर्मुक्तास्ते मग्ना भवसागरे। ये निरुद्धास्त एवात्र मोदमायान्त्यहर्निशम्॥११॥	जो श्रीहरि से विमुख हैं, वे भव-सागर में निमग्न हैं। जिन्होंने इस संसार में इन्द्रिय संयम किया हुआ है, वे दिन और रात, हमेशा आनंद को उपलब्ध होते हैं॥११॥	Those who do not love Sri Hari are fully drowned in the cycle of birth and death. Those, who have controlled their senses, attain bliss day and night, always.॥11॥
संसारावेशदुष्टानामि- न्द्रियाणां हिताय वै। कृष्णस्य सर्ववस्तूनि भूम्न ईशस्य योजयेत्॥१२॥	संसार में आसक्त दुष्ट इन्द्रियों को, उनके हित के लिए 'सभी वस्तुएं श्रीकृष्ण रूप हैं' इस विचार से भगवान में लगाना चाहिए॥१२॥	The senses who are attached to worldly things, should be brought back to Sri Krishna by thinking that anything and everything is but a form of Sri Krishna only.॥ 12॥

गुणेष्वाविष्टचित्तानां सर्वदा मुरवैरिणः। संसारविरहक्लेशौ न स्यातां हरिवत्सुखम्॥१३॥	गुणों में आसक्त मन को सदा मुरारि, श्रीकृष्ण में लगाने से संसार त्याग का दुःख नहीं होगा और श्रीहरि दर्शन के समान सुख की प्राप्ति होगी॥१३॥	The mind, which is attached to worldly pleasures, should always be focused on Sri Krishna. This will remove the pain of separation from the world and one will experience pleasure as in seeing Sri Hari.॥13॥
तदा भवेद्दयालुत्व- मन्यथा क्रूरता मता। बाधशंकापि नास्त्यत्र तदध्यासोऽपि सिद्ध्यति॥१४	इसके बाद ईश्वर की कृपा ही होगी अन्यथा प्रभु में क्रूरता का दोष आएगा। इसमें रूकावट की आशंका भी नहीं है और संसार की असारता का अनुभव भी हो जाता है॥१४॥	After this, grace of Lord has to happen, otherwise, it leads to feeling of cruelty in Lord which is impossible. There is no fear of interruption in it and one also experiences the futility of this world.॥14॥
भगवद्धर्म सामर्थ्या- द्विरागो विषये स्थिरः। गुणैहरेः सुखस्पर्शान्न दुःखं भाति कर्हिचित्॥१५॥	भागवत धर्म की शक्ति से विषयों में विराग हो जाता है, गुण संतुलित हो जाते हैं। श्रीहरि नाम के सुख स्पर्श से दुःख का आभास भी नहीं होता॥१५॥	Devotion to the Lord brings indifference to worldly pleasures and balances our nature. One does not even sense any pain after experiencing the pleasure of chanting the glory of God.॥15॥
एवं ज्ञात्वा ज्ञानमार्गा- दुत्कर्षं गुणवर्णने। अमत्सैररलुब्धैश्च वर्णनीयाः सदा गुणाः॥१६॥	इस प्रकार श्रीहरि के गुण वर्णन को ज्ञान मार्ग से उत्कृष्ट जान कर, ईर्ष्या और लोभ को छोड़कर सदा उनके गुणों का वर्णन करना चाहिए॥१६॥	Thus, knowing that singing glory of Sri Krishna is much superior to the path of knowledge, one should always chant the glory of God without any envy and greed.॥16॥
हरिमूर्तिः सदा ध्येया संकल्पादपि तत्र हि। दर्शनं स्पर्शनं स्पष्टं तथाकृतिगती सदा॥१७॥	श्रीहरि की मूर्ति का सदा ध्यान करना चाहिए और उनके साक्षात् दर्शन और स्पर्श का ही संकल्प करना चाहिए और सदा इसलिए ही सारे कार्य करने चाहिए॥ १७॥	One should always meditate on the idol of Sri Krishna and should resolutely wish for his direct experience and divine touch. All activities should be performed for this aim only.॥17॥
श्रवणं कीर्तनं स्पष्टं पुत्रे कृष्णप्रिये रतिः। पायोर्मलांशत्यागेन शेषभागं तनौ नयेत्॥१८॥	ध्यान पूर्वक श्रीकृष्ण के श्रवण और कीर्तन करते हुए, पत्नी - पुत्र से वैसे ही प्रेम करें जैसे शरीर पायु इन्द्रिय को मल -मूत्र त्याग के बाद शरीर में ही लिए रहता है॥१८॥	Concentrating on signing and hearing glory of Sri Krishna, one should maintain relationship with his son and wife as body maintains with excretory organs.॥18॥
यस्य वा भगवत्कार्य यदा स्पष्टं न दृश्यते। तदा विनिग्रहस्तस्य कर्तव्य इति निश्चयः॥१९॥	जो कार्य स्पष्ट रूप से श्रीहरि सेवा से सम्बंधित न दिखाई दे उसका न करना कर्त्तव्य है, ऐसा ही सिद्धांत है॥१९॥	If an activity does not look clearly related to the service of Sri Krishna, it is your duty not to

		do it. This is the final principle.॥ 19॥
नातः परतरो मन्त्रो नातः परतरः स्तवः। नातः परतरा विद्या तीर्थं नातः परात्परम्॥२०॥	इससे बढ़कर कोई मंत्र नहीं है, इससे बढ़कर कोई स्तुति नहीं है, इससे बढ़कर कोई विद्या नहीं है, इससे बढ़कर कोई तीर्थ नहीं है, अतः यह (सिद्धांत) सबसे बढ़कर है॥२०॥	There is no better mantra than this, there is no better worship than this, there is no better knowledge than this, there is no better pilgrimage than this. This is the principle supreme!॥20॥

Comments

You do not have permission to add comments.

Navigation
- Home/मुख्य पृष्ठ
  - Ashtavakra Gita / अष्टावक्र गीता
  - Bhagwat / भागवत
  - Chatuh Shloki Bhagwat / चतु: श्लोकी भागवत
  - Gita / गीता
  - Shikshashtakam / शिक्षाष्टकं
  - SoundBytes / सुवचन
  - Sri Ram Hrudayam / श्रीराम हृदयम्
  - Sri Shankaracharya / श्रीशंकराचार्य
  - Sri Tulsidas / श्रीतुलसीदास
  - Sri Vallabhacharya / श्रीवल्लभाचार्य
  - Subhashitani / सुभाषितानि
  - Upanishad / उपनिषद्
- General
  - Bookmarks
  - Getting Books
  - Hindi Alphabets
  - Important Books
- Miscellaneous
- Sitemap

Home/मुख्य पृष्ठ > Sri Vallabhacharya / श्रीवल्लभाचार्य >

PanchPadyani / पंचपद्यानि

पञ्चपद्यानि (मूल संस्कृत)	पञ्चपद्यानि (हिंदी भावानुवाद)	PanchPadyani (English)
श्रीकृष्णरसविक्षिप्त- मानसा रतिवर्जिता:। अनिर्वृतालोकवेदे ते मुख्या: श्रवणोत्सुका:॥१॥	भगवान श्रीकृष्ण की भक्ति में पूर्ण मन से लीन रहने वाले, अन्य आकर्षणों से विरक्त रहने वाले, लौकिक और पारलौकिक चर्चाओं से दूर रहने वाले, श्रवण की इच्छा रखने वाले श्रोताओं में प्रमुख हैं॥१॥	Completely engrossed in the devotion to Lord Sri Krishna, devoid of any other interests, away from worldly and philosophical debates and always eager to listen about him characterizes main listeners.॥1॥
विक्लिन्नमनसो ये तु भगवत्स्मृतिविह्वला:। अर्थैकनिष्ठास्ते चापि मध्यमा: श्रवणोत्सुका:॥२॥	भगवान श्रीकृष्ण को आंशिक रूप से याद करने वाले, उनके स्मरण में भाव-विभोर होने वाले और किसी प्रयोजन (मोक्ष आदि) के लिए भक्ति करने वाले, श्रवण की इच्छा रखने वाले श्रोताओं में मध्यम कहे गए हैं॥२॥	Those who remember Lord Krishna frequently, who get overpowered with emotions in the memory of Lord Krishna, who worship him to fulfill their desires are said to be intermediate listeners.॥2॥
नि:संदिग्धं कृष्णतत्त्वं सर्वभावेन ये विदु:। ते त्वावेशात्तु विकला निरोधाद्वा न चान्यथा॥३॥	जो बिना किसी संशय के भगवान श्रीकृष्ण को सब प्रकार से तत्त्वत: जानते हैं, जो तत्त्व के आवेश और निरोध से विकल हो जाते हैं पर अन्य प्रकार से नहीं॥३॥	Those who know Lord Krishna without any doubt in all his splendor, who attain ecstasy during meditation or at its end but not otherwise.॥3॥
पूर्णभावेन पूर्णार्था: कदाचित् तु सर्वदा। अन्यासक्तास्तु ये केचिदधमा: परिकीर्तिता:॥४॥	जो कभी-कभी ही पूर्ण भाव से भगवान श्रीकृष्ण को सब प्रकार से जानते हैं और प्राय: अन्यत्र ही आसक्त रहते हैं, उनको निम्न कोटि का श्रोता कहा गया है॥४॥	Those who experience the magnificence of Lord Krishna once in a while but are mostly attached to worldly affairs are designated as the base listeners.॥4॥
अनन्यमनसो मर्त्या उत्तमा: श्रवणादिषु। देशकालद्रव्यकर्तृ- मन्त्रकर्मप्रकारत:॥५॥	स्थान, समय, वस्तु, कर्ता, मंत्र और कर्म के भाव से असक्त, अनन्य मन से भगवान श्रीकृष्ण के बारे में सुनने वाले मनुष्य उत्तम कहे गए हैं॥५॥	Best listeners are those who constantly worship Lord Krishna with non-dual mind, not caring for place, time, means, doer, mantra and action.॥5॥

Comments

You do not have permission to add comments.

Pushti Pravah Maryada / पुष्टि प्रवाह मर्यादा

पुष्टि प्रवाह मर्यादा (संस्कृत)	पुष्टि प्रवाह मर्यादा (हिंदी)	Pushti Pravah Maryada (English)
पुष्टिप्रवाह मर्यादा विशेषेण पृथक पृथक। जीव-देह-क्रियाभेदैः प्रवाहेण फलेन च॥१॥		The path of Grace, the worldly path and the path of (Vedic) limitations are three distinct paths and I now narrate for souls in each of them the difference in their souls, body actions, both in reference to their origin and goals. After hearing this there will not occour any doubts. By mention of "Path of devotion" (in chapter 12 of Geeta), it is certain that the path of Grace exists. (1, 2)
वक्ष्यामि सर्वसन्देहा न भविष्यन्ति यच्छुतेः। भक्तिमार्गस्यकथनात पुष्तिरस्तीति निश्चयः॥२॥		
"द्वौ भूतसर्गा" वित्युक्तेः प्रवाहोऽपि व्यवस्थितः। वेदस्य विद्यमानत्वान्- मर्यादापि व्यवथिता॥३॥		(In Geeta 16-6) by reference to words "Two kinds of beings", the worldly path is established and with the existence of vedic scriptures, the path of limitations is also established. (3)
कश्चितदेव हि भक्तो हि "यो मद्भक्त" इतीरणात। सर्वत्रोत्कर्षकथनात पुष्टिरस्तीति निश्चयः॥४॥		"In Geeta 12-13 by reference to words" one who is my devotee" only a rare person is a devotee. As God has mentioned everywhere about their being the best, it is certain tha the path of Grace exist. In Geeta, 11-53 by reference to words "I am not ..... by Vedas" it is clear that all souls are not alike and the path of grace is definitely different from worldly path and also the path of limitations, due to basic difference. (4, 5)
न सर्वोतः प्रवाहादि भिन्नोवेदाच्च भेदतः। "यदा यस्ये" ति वचना "न्नाहंवेदै" रितीरणात॥५॥		
मार्गैकत्वेपि चेदन्त्यौ तनू भक्त्यागमौ मतौ। न तद्युक्तं सूत्रतोहि भिन्नौ युक्त्या हि वैदिकः॥६॥		If some one argues that path of devotion is only one and that the last two namely, worldly path and path of limitations, are like its limbs, giving only devotion, it is not proper as the path of limitations is different is clearly established by percepts of

devotion and by logical arguments. (6)

जीवदेहकृतीनां च भिन्नत्वं
नित्यता श्रुतेः।
यथा तद्वत्पुष्टिमार्गे
द्वयोरपि निषेधतः॥७॥

Just as differenciation of soul, body and activities is established by divine Scriptures, so also eternity of path of grace is also established. By negation of the path of limitations as well as worldly path and by differences of authorities, the path of grace is definitely asserted as separate path. (7 1/2)

प्रमाणभेदाद्भिन्नोहि
पुष्टिमार्गो निरूपितः।
सर्गभेदं प्रवक्ष्यामि
स्वरूपांगक्रियायुतम॥८॥

इच्छामात्रेण मनसा
प्रवाहं सृष्टवान हरिः।
वचसा वेदमार्ग हि
पुष्टिः कायेन निश्चयः॥९॥

I shall specifically tell about the differenciation of creation of all souls in respect of their basic form, body and activities, HARI Shree KRUSHNA created creatures of worldly path out of his mind by a mere desire. The creatures of the path of limitations were created by him from his utterances and the creatures of the path of Grace from his own body. This is certain. (9)

मूलेच्छातः फलं लिके
वेदोक्तं वैदिकेपि च।
कामेन तु फलं पुष्टौ
निजेच्छातोऽपि नैकता॥१०॥

In the worldly path, the worldly rewards are out of his original wish to keep the world running, in the path of limitations, the reward is as prescribed in the holy scriptures; in the path of Grace, the award is THROUGH HIS AUGUST PURESELF, Thus the creation is not of one kind due to HIS desire to give different awards. (10)

"तानहं द्विषतो" वाक्या-
द्भिन्ना जीवाः प्रवाहिणः।
अत एवेतरौ भिन्नौ
सान्तौ मोक्षप्रवेशतः॥११॥

In (Geeta 16-19) by reference to "Those Jealous", it is certain that the souls in the worldly path are of a different category. The souls in worldy path remain forever in the endless series of birth and death. Where as soul in path of limitations achieve salvation and souls in the path of grace enter into him. (11)

तस्माज्जीवाः पुष्टिमार्गे
भिन्ना एव न संशयः।
भगवदरूप सेवार्थं
तत्सृष्टिर्नान्यथा भवेत॥१२॥

Therefore there is no doubt at all that the souls in the path of grace are of a special category. They are intended for DIVINE SERVICE OF SHREE KRUSHNA HIMSELF. The creation of the souls in the Path of Grace cannot be otherwise. (12)

स्वरूपेणावतारेण
लिंगेन च गुणेन च।
तारतम्यं न स्वरूपे देहे
वा तत्क्रियासु वा॥१३॥

In respect of souls of path of grace, their original selves, their manifestations, their apparent signs and their attributes, there is no difference in their owtward form, their bodies or their activities, Even then, depending upon the activities expected from each soul of Grace, HE surely creates a difference in each. (13 1/2)

तथापि यावता कार्य
तावत्तस्य करोति हि।
ते हि द्विधा शुद्धमिश्रभेदा-
न्मिश्रास्त्रिधा पुन॥१४॥

प्रवाहादिविभेदेन
भगवतकार्यसिद्धये।
पुष्ट्याविमिश्राः सर्वज्ञाः
प्रवाहेण क्रियारताः॥१५॥

The soul of Grace are of two categories, Pure and Mixed forms. Again the mixed one are three fold in respect of worldy souls etc., to accomplish HIS purposes. Those souls of grace mixed with Grace are omniscient; those mixed with wordly category are attached to religious activities; those mixed with limitations category very well understand the attributes greatness of SHREE KRUSHNA. The pure unmixed souls of Grace full of love for GOD SHREE KRUSHNA are very rare to be found. (15 1/2)

मर्यादया गुणज्ञास्ते
शुद्धाः प्रेम्णातिदुर्लभाः।
एवं सर्गस्तु तेषां हि
फलं त्वत्र निरूप्यते॥१६॥

भगवानेव हि फलं स
यथाऽऽविर्भवेद्भुवि।
गुणस्वरूपभेदेन तथा
तेषां फलं भवेत॥१७॥

Thus was about their creation (origin). Now I shall state the awards in respect of them, for the souls in the path of Grace, Shree Krushna himself is the award. The way HE manifests himself on the earth with different attributes and form of himself, the award (also) for them will be of that type. (17)

आसक्तौ भगवानेव
शापं दापयति क्वचित।
अहंकारेऽथवा लोके
तन्मार्गस्थापनाय हि॥१८॥

When souls of grace of mixed variety get attached to worldly objects, at times, GOD himself gets them cursed by someone; so also in the case of their pride; but that is so done only to establish HIS way in the world. (18)

न ते पाषण्डतांयान्ति
न च रोगाद्युपद्रवाः।
महानुभावाः प्रायेण
शास्त्रं शुद्धत्वहेतवे॥१९॥

In spite of this, They do not become atheists (non believers in GOD) nor do they have any troubles by way of diseases etc., Mostly they are well versed in scriptures and the purpose is to sanctify them. (19)

भगवत्तारतम्येन
तारतम्यं भजन्ति हि।
वैदिकत्वं लौकिकत्वं
कापट्यात्तेषु नान्यथा॥२०॥

Depending upon different manifestations of GOD to them, they worship the only relevant form of SHREE KRUSHNA. Their activities relating to the scriptures and relating to worldly affairs are only by way of a show and not for any awards. For them, belonging to VISHNU (Shri Krushna) is but natural. Reverse is the case in others (i.e abiding laws of scriptures is natural to souls of limitations and abiding by worldly laws is natural to wordly souls other two being done, if all, is for a show). (20 1/2)

वैष्णवत्वं हि सहजं
ततोऽन्यत्र विपर्ययः।
सम्बन्धिनस्तु ये जीवाः
प्रवाहस्थास्तथाऽपरे॥२१॥

चर्षणीशब्दवाच्यास्ते
ते सर्वे सर्ववर्त्मसु।
क्षणात्सर्वत्वमायान्ति
रुचिस्तेषां न कुत्रचित॥२२॥

Those who keep themselves connected with all the paths and other types of worldly souls should be known as disloyal remblers. They wander in all paths momentarily getting absorbed in one or the other path but have no attachement anywhere. For them according to their actions they get all worldly awards everywhere. (22 1/2)

तेषां क्रियानुसारेण
सर्वत्र शकलं फलं।
प्रवाहस्थान प्रवक्ष्यामि
स्वरूपांगक्रियायुतान॥२३॥

जीवास्ते ह्यासुराः सर्वे
“प्रवृत्तिं चेति” वर्णिताः।
ते च द्विधा प्रकीर्त्यन्ते
ह्यज्ञदुर्ज्ञविभेदतः॥२४॥

I will now mention about worldly souls in respect of their basic form, body and actions, They are devilish as illustrated in Geeta (1 6-7), by words "and activities". They are also known to be of Two types those with defective understanding as different from those with evil understanding. (24)

दुर्ज्ञास्ते भगवत्प्रोक्ता
ह्यज्ञास्ताननु ये पुनः।
प्रवाहेपि समागत्य
पुष्टिस्थस्तैर्न युज्यते॥
सोऽपिस्तैस्तत्कुले जातः
कर्मणा जायते यतः॥२५॥

Those with evil understanding are described by SHREE KRUSHNA in Geeta. Those with defective understanding unconciously follow them. If by chance a soul of grace comes to the path of world, he does not merge with it or follow it. He also is born with them in that family as anti-scripture activities lead to such birth. (25, 25 1/2)

Comments

You do not have permission to add comments.

Navigation
Home/मुख्य पृष्ठ
Ashtavakra Gita / अष्टावक्र गीता
Bhagwat / भागवत
Chatuh Shloki Bhagwat / चतु: श्लोकी भागवत
Gita / गीता
Shikshashtakam / शिक्षाष्टकं
SoundBytes / सुवचन
Sri Ram Hrudayam / श्रीराम हृदयम्
Sri Shankaracharya / श्रीशंकराचार्य
Sri Tulsidas / श्रीतुलसीदास
Sri Vallabhacharya / श्रीवल्लभाचार्य
Subhashitani / सुभाषितानि
Upanishad / उपनिषद्
General
Bookmarks
Getting Books
Hindi Alphabets
Important Books
Miscellaneous
Sitemap

Home/मुख्य पृष्ठ > Sri Vallabhacharya / श्रीवल्लभाचार्य >

Siddhant Muktavali / सिद्धान्त मुक्तावली

सिद्धान्त मुक्तावली (संस्कृत)	सिद्धान्त मुक्तावली (हिंदी)	Siddhant Muktavali (English)
नत्वा हरिं प्रवक्ष्यामि स्वसिद्धांत विनिश्चयम। कृष्ण सेवा सदा कार्या मानसी सा परा स्मृता॥१॥		After bowing down to Hari Shree KRUSHNA I tell decisively established doctrines Bhaktimarg. Divine service of Shree KRUSHNA should always be practiced.The one done mentally is considered the best. (1)
चेतस्तत्प्रवणं सेवा तत्सिद्ध्यै तनुवित्तजा। ततः संसारदु:खस्य निवृत्तिर्ब्रह्मबोधनम॥२॥		To engross one's mind totally in Shree KRUSHNA is called devotion. It is achieved by devotion of body and financial resources in his service. This results in liberation from wordly distresses and realisation of Brahma, The Supreme Soul, GOD KRUSHNA. (2)
परं ब्रह्म तु कृष्णो हि सच्चिदानंदकं बृहत। द्विरूपं तद्धि सर्वं स्यादेकं तस्माद्विलक्षणम॥३॥		The most supreme being is but only Shree KRUSHNA. While the abode of the Supreme spirit is a combination of existence, consciousness and bliss, even that is in two forms, one is all around The visible universe and the other quite distinct from that. (3)
अपरं तत्र पूर्वस्मिन वादिनो बहुधा जगु:। मायिकं सगुणं कार्यं स्वतंत्र चेति नैकधा॥४॥		In the case of the first form, there are many different views. Some assert it to be illusion. Some believe it to be a result of attributes. Some again assert it to be an act of GOD. And some confirm it to be self made eternal and so on in many other ways. (4)
तदेवैतत्प्रकारेण भवतीति श्रुतेर्मतम। द्विरूपं चापि गंगावज्- ज्ञेयं सा जलरूपिणी॥५॥		In the opinion of Vedas, the abode of the supreme being itself takes the form of the universe and its two forms as well should be viewed as in the case of (RIVER) Ganga. She is in the form of water the physical form. She also gives worldly pleasures and liberation to those who knowing her greatness worship her metaphysical or spiritural form as per established rules. The abode of Supreme spirit (aarcsrm) should also be undersood similarly. (5- 6)
माहात्म्यसंयुता नृणां सेवतांभुक्तिमुक्तिदा। मर्यादामार्गविधिना तथाब्रह्मापि बुद्ध्यताम॥६॥		
तत्रैव देवतामूर्तिर्भक्त्या या दृश्यते क्वचित। गंगायांच विशेषेण प्रवाहाभेदबुद्धये॥७॥		There in the River Ganga itself, Ganga in the form of Devi is only some times seen by those to whom the flowing waters and the Devi are identical. She, Ganga as Devi is not visible to all (but) through it there is her waters, which is confirmed by

laying down awards (of Ganga worship) in scriptures and is also experienced by many, who distinguish it as higher than her waters. (7 - 8)

प्रत्यक्षा सा न सर्वेषां
प्राकाम्यं स्यात्तया जले।
विहिताच्च फलात्तद्धि
प्रतीत्यापि विशिष्यते॥८॥

यथा जलं तथा सर्वं
यथा शक्ता तथा बृहत।
यथा देवी तथा कृष्णस्-
तत्राप्येतदिहोच्यते॥९॥

As in the case with Waters of Ganga so is all universe. AS is the capacity to sanctify in Ganga so is the abode of the Supreme Spirit. As is the deity form Of Godess Ganga, so is SHREE KRUSHNA. There also it is further being told. (9)

जगत्तु त्रिविधं प्रोक्तं
ब्रह्मविष्णुशिवास्ततः।
देवतारूपवत्प्रोक्ता
ब्रह्मणीत्थं हरिर्मतः॥१०॥

The universe (world) is said to be three fold. Hence Gods BRAHMA, VISHNU AND SHIVA are known as deities (FOR each function). Similarly HARI SHREE KRUSHNA is beleived to be in the abode of Supreme Spirit. (arenas!). (10)

कामचारस्तु लोकेस्मि-
ब्रह्मादिभ्यो न चान्यथा।
परमानन्दरूपे तु कृष्णे
स्वात्मनि निश्चयः॥११॥

In this world, fulfiment of desire is through Brahma etc., and in no other way. But for Salvation of One's own soul, rests only in KRUSHNA, The Supreme Joy. Therefore based on the principle that everything is supreme spirit, the inner thinking should be inclined towards Shree KRUSHNA. In the case of soul (WRTT) which is a form of the Supreme spirit (aio) inclinations of mind (intellect) behave equally as small holes in the sky (showing openings which do not exist). (11.12)

अतस्तु ब्रह्मवादेन
कृष्णे बुद्धिर्विधीयताम।
आत्मनि ब्रह्मरूपे हि
छिद्रा व्योम्नीव चेतनाः॥१२॥

उपाधिनाशे विज्ञाने
ब्रह्मत्वत्वावबोधने।
गंगातीरस्थितो यद्ध-
देवतां तत्र पश्यति॥१३॥

Just as a devotee standing on the bank of Ganga sees there the Ganga Devi, similarly on disapparance of obstructions and on realising the truth or on perceiving real truth of the whole world being a part of Supreme Spirit the awakened intellactual sees in himself KRUSHNA, the most supreme spirit prom). (13 1/2)

तथा कृष्णं परं ब्रह्म
स्वस्मिन ज्ञानी प्रपश्यति।
संसारी यस्तु भजते
स दूरस्थो यथा तथा॥१४॥

Just as a devotee of Ganga staying far away from Ganga is miserable on account of absence of badly needed water etc., so also is the case of devotee of KRUSHNA engrossed in worldly affairs. (14 1/2)

अपेक्षित जलादीनाम-
भावात्तत्र दुःखभाक।
तस्माच्छ्रीकृष्णमार्गस्थो
विमुक्तः सर्वलोकतः॥१५

Therefore one who is in the path of devotion of SHREE KRUSHNA and who is complately free from worldly fetters should meditate only about KRUSHNA, resting in the ocean of self - joy or adobe of supreme Spirit (wrorei). (15 1/2)

आत्मानंदसमुद्रस्थं
कृष्णमेव विचिन्तयेत।
लोकार्थी चेदभजेत कृष्णं
क्लिष्टो भवति सर्वथा॥१६॥

If one, who is full of worldly desires as his aim, worships KRUSHNA, he distressed. Even when so distressed, if he worships KRUSHNA, he gets bereft of wordly constraints, (16 1/2)

क्लिष्टोपि चेदभजेत कृष्णं
लोको नश्यति सर्वथा।
ज्ञानाभावे पुष्टिमार्गी
तिष्ठेत पूजोत्सवादिषु॥१७॥

मर्यादस्थस्तु गंगायां
श्रीभगवततत्परः।
अनुगृहः पुष्टिमार्गे
नियामक इति स्थितिः॥१८॥

In the absence of realistion of one's own and KRUSHNA's real form, a devotee in the path of Grace should stay in a place where worshipping and celebrations for Shree KRUSHNA prevail. A devotee in the doctrine of established rules, should stay near Ganga and be engrossed in reading BHAGAVATA. GOD's GRACE in the only controlling force in the path of Grace. This is the real Position. (18)

उभयोस्तु क्रमेणैव
पूर्वोक्तैव फलिष्यति।
ज्ञानाधिको भक्तिमार्ग
एवं तस्मान्निरूपितः॥१९॥

For both categories and, the above reffered mental devotion will bear fruits successively. The path of Devotion is Superior to that of Knowledge and hence it is so narrated. (19)

भक्त्यभावे तु तीरस्थो
यथा दुष्टैः स्वकर्मभिः।
अन्यथाभावनापन्नस्-
तस्मात्स्थानाच्च नश्यति॥२०॥

In the absence of devotion, however, as one even on the banks of Ganga with his own sinfull deeds, becomes otherwise Perverted and degenerates from his position so also in the case of a devotee of KRUSHNA. (20)

एवं स्वशास्त्रसर्वस्वं
मया गुप्तं निरूपितम।
एतदवुध्वा विमुच्येत
पुरुषः सर्वसंशयात॥२१॥

Thus I have laid down, though secret, all the doctrines of devotion of the Pusti margh. A person who thoroughly understands them will be free from all doubts. (21)

Comments

You do not have permission to add comments.

Navigation
Home/मुख्य पृष्ठ
Ashtavakra Gita / अष्टावक्र गीता
Bhagwat / भागवत
Chatuh Shloki Bhagwat / चतुः श्लोकी भागवत
Gita / गीता
Shikshashtakam / शिक्षाष्टकं
SoundBytes / सुवचन
Sri Ram Hrudayam / श्रीराम हृदयम्
Sri Shankaracharya / श्रीशंकराचार्य
Sri Tulsidas / श्रीतुलसीदास
Sri Vallabhacharya / श्रीवल्लभाचार्य
Subhashitani / सुभाषितानि
Upanishad / उपनिषद्
General
Bookmarks
Getting Books
Hindi Alphabets
Important Books
Miscellaneous
Sitemap

Home/मुख्य पृष्ठ > Sri Vallabhacharya / श्रीवल्लभाचार्य >

Siddhant Rahasyam / सिद्धांत रहस्यं

सिद्धांत रहस्यं (मूल संस्कृत)	सिद्धांत रहस्यं (हिंदी भावानुवाद)	Siddhant Rahasyam (English)
श्रावण स्यामले पक्षे एकादश्यां महानिशि। साक्षात् भगवता प्रोक्तं तदक्षरश उच्यते॥१॥	श्रावण मास के कृष्ण पक्ष की एकादशी तिथि की महारात्रि को स्वयं भगवान द्वारा मुझसे कहे गए वचनों को अक्षरशः कहता हूँ॥१॥	On the midnight of the eleventh day of the dark half of Shravana month, what Sri Krishna himself said to me is being told here verbatim.॥1॥
ब्रह्म सम्बंध करणात् सर्वेषां देहजीवयोः। सर्वदोषनिवृत्तिर्हि दोषाः पञ्चविधाः स्मृताः॥२॥	ब्रह्म सम्बन्ध रूपी साधन से सभी जीवधारियों के समस्त दोषों का नाश हो जाता है जो स्मृतियों में पाँच प्रकार के कहे गए हैं॥२॥	All impurities of all the living beings are destroyed through association of Lord. The impurities are said to be of five types in scriptures.॥2॥
सहजा देशकालोत्था लोकवेदनिरूपिताः। संयोगजाः स्पर्शजाश्च न मन्तव्याः कथञ्चन॥३॥	सामान्य, स्थान और समय से सम्बंधित, समाज और वेदों में वर्णित, संयोग और स्पर्श से होने वाले, इनमें से किसी को अपने में न मानते हुए अपना साधन करते रहना चाहिए॥३॥	These are - natural(with birth), arising due to ambiance, mentioned by society or scriptures, time and space, arising due to association of bad company or objects. We should focus on our association with Lord, ignoring all of these.॥3॥
अन्यथा सर्वदोषाणां न निवृत्तिः कथञ्चन। असमर्पितवस्तुनां तस्माद्वर्जनमाचरेत्॥४॥	किसी अन्य प्रकार से समस्त दोषों का नाश संभव नहीं है, अतः जो कुछ भी प्रभु को समर्पित नहीं किया गया है उसका बहिष्कार करना चाहिए॥४॥	There is no other way to destroy all the impurities. Hence, discard all the things which are not offered to Lord.॥4॥
निवेदिभिः समर्प्यैव सर्वं कुर्यादिति स्थितिः। न मतं देवदेवस्य सामिभुक्तं समर्पणं॥५॥	प्रार्थना करते हुए समस्त वस्तुओं को मुझे समर्पित करना चाहिए। किसी अन्य देवता को अर्पित की गयी वस्तु मुझे समर्पित नहीं करनी चाहिए॥५॥	One should offer all the things to me with devotion. Never offer anything to Lord Krishna which is already offered to other gods.॥5॥
तस्मादादौ सर्वकार्ये सर्ववस्तु समर्पणम्। दत्तापहारवचनं तथा च सकलं हरेः॥६॥	अतः सभी कार्यों के प्रारंभ में ही समस्त वस्तुएं प्रभु को समर्पित करनी चाहिए। श्रीहरि को समर्पित सभी कुछ उनका ही है अतः उन दी हुई वस्तुओं को-॥६॥	Hence, in the very beginning of all activities, we should offer all the things to Sri Hari. The things which are given to Lord belong exclusively to him-॥6॥

न ग्राह्यमिति वाक्यं हि भिन्नमार्गपरं मतम्। सेवकानां यथालोके व्यवहारः प्रसिध्यति॥७॥	अपने प्रयोग में नहीं लाना चाहिए यह वाक्य दूसरे मतावलंबियों के अनुसार ही सत्य है(पुष्टिमार्ग के अनुसार नहीं)। सेवकों का जो आचरण समाज में प्रसिद्ध है उसी का अनुसरण करते हुए ॥७॥	so one should not use them, is accepted by other sects (and definitely not by Pushti Marg). One should follow the famous path of servant towards his master-॥7॥
तथा कार्यं समर्प्यैव सर्वेषां ब्रह्मता ततः। गंगात्वं सर्वदोषाणां गुणदोषादिवर्णना। गंगात्वेन निरूप्या स्यात्तद्वदत्रापि चैव हि॥८॥	और सभी कार्यों को प्रभु को ही समर्पित करने से वे प्रभु जैसे ही पवित्र हो जाते हैं। जिस प्रकार गंगा में मिलने से सभी प्रकार का जल पवित्र होकर गंगात्व को प्राप्त हो जाता है उसी प्रकार यहाँ भी समझना चाहिए॥८॥	and offer everything to Lord so that they attain the sacredness of Lord. All attributes of water, dirty or pure, after merging in Ganga are referred as belonging to Ganga which is pure by nature. Offerings to Lord should be understood similarly.॥8॥

Comments

You do not have permission to add comments.